अति स्नेहपूर्वक आचरण

Spiritual Master's Service is the very life of a real disciple.
Spiritual Master's Service is the Only means of Happiness.

भक्तों में भी कई भक्त होते हैं जो श्रवण कीर्तन करते हैं परन्तु पूर्ण लाभ नहीं ले पाते। कारण क्या है? वह होता है --

"बहु जन्मे यदि करे श्रवण कीर्तन।
तबु तो ना पाए कृष्ण पदे प्रेम धन।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ८.१६)

दीक्षा हो जाती है। भजन करना..., परन्तु पूर्ण लाभ नहीं हो पाता। ठाकुर महाशय क्या कहते हैं प्रेम भक्ति चन्द्रिका में --

"ठाकुर वैष्णव-पद, अवनीर सम्पद, शुनो भाइ हइया एकमन।
आश्रय लइया सेइ भजे, तारे कृष्ण नाहि त्यजे, आर सब मरे अकारण।।"
(प्रार्थना १७ - श्रील नरोत्तम दास ठाकुर)

जो आश्रय लेकर भजन करता है, उसका कृष्ण कभी त्याग नहीं करते। जिनका... जो गुरु का वास्तविक आश्रय लेकर भजन करता है, उसका कृष्ण कभी त्याग... यह नहीं कहा जा रहा- 'जो दीक्षा लेकर भजन करता है।' सब ध्यान दे रहे हैं? जो आश्रय लेकर भजन करता है। आश्रय किस चीज़ का? गुरु की कृपा का आश्रय लेकर जो भजन करता है, उसका कृष्ण कभी परित्याग नहीं करते। इसके अलावा सभी व्यक्ति अकारण मरते हैं। बहु जन्में वाला श्रवण कीर्तन होता है वह...

हम सब आनंद चाहते हैं। जो बुद्धिमान साधक है उसको पता है कि --

Spiritual Master's Mercy is the Only means of Auspiciousness;
is the Only means of Happiness;
is the Only way of Blessings!

Spiritual Master's Mercy... गुरु की कृपा ही एकमात्र उपाय है शुभता का जीवन में, एकमात्र उपाय है आनंद का जीवन में। इसलिए जो बुद्धिमान् साधक है, वह हर प्रकार की चेष्टा करता है- तन से, मन से, धन से और जो कुछ उसके पास है- पत्नी..., अपने तन मन धन को सर्वस्व लगाता है जो बुद्धिमान् व्यक्ति है। सब नहीं लगाते क्योंकि सब बुद्धिमान नहीं होते। सर्वस्व लगाते हैं- तन, मन, धन। किसलिए...? देखिए हर चीज़ का मूल है कि हमें आनंद चाहिए। तो पता है कि गुरु की कृपा से ही

हमारा कार्य सिद्ध होगा, आनंद प्राप्ति होगी। तो तन, मन, धन..., अगर पत्नी है तो अपने पत्नी, बच्चों को, पति को सर्वस्व को सेवा में लगाने की चेष्टा। अगर पति है तो पत्नी को, बच्चों को खुशी पूर्वक, सर्वस्व रुप में, पूर्ण रुप से सेवा में लगाना। जो कुछ है...! है किसलिए है सब कुछ? किसलिए है सब हमारे पास?

आनंद के अलावा न हम कुछ चाहते हैं, न हम कुछ चाह सकते हैं। क्योंकि आनंद ब्रह्म के अंश हैं। तो सर्वस्व हमारा किसलिए है? आनंद की प्राप्ति के लिए। तो आनंद की प्राप्ति तो गुरु की सेवा से प्राप्त होगा, अगर गुरु प्रसन्न हो जाते हैं तो हमें भगवान् की कृपा प्राप्त होगी - *यस्य प्रसादाद् भगवत् प्रसादो।*

अब सर्वस्व जब है ही आनंद के लिए, तो वह सही direction में लगना, इसे बुद्धिमता कहते हैं। किसलिए है हमारे पास सब कुछ? आनंद के लिए। और कोई के..., और कुछ के लिए नहीं। यह बात, यह बात समझ जाइए, यह इस मूल सिद्धान्त को - "आनंद के अलावा हम कुछ चाह ही नहीं सकते और बुद्धिमान् व्यक्ति वह है जो गुरु की कृपा का आश्रय लेकर अपना जीवन यापन करता है।" पता है एकमात्र उपाय आनंद का यही है। यही..., इनकी कृपा।

अब... अब प्रश्न उठता है कि यह तो ठीक है कि गुरु की कृपा से आनंद प्राप्त होगा। अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि, "यह गुरु की कृपा कैसे प्राप्त होगी?"..., सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न। इसका उत्तर भी बहुत सरल है, "गुरु की सेवा करके"। जब हम गुरु की सेवा करते हैं तो हमारा चित्त गुरुदेव से जुड़ जाता है, उनका aura हमारे साथ जुड़ जाता है। अगर हम उनकी सेवा करेंगे तो हमें उनकी कृपा प्राप्त होगी। ठीक है? परन्तु समस्या यह है, भगवान् हैं आत्माराम, आप्तकाम..., न भगवान् को हमारी सेवा की ज़रुरत है न गुरु को हमारी सेवा की ज़रुरत है। सेवा करेंगे तो कृपा मिलेगी। अब सेवा की ज़रुरत ही नहीं है तो अब क्या करें? सेवा तो... ज़रुरत है ही नहीं, चाहिए ही कुछ नहीं तो मिलेगा क्या? अरे, वे आपसे... एक संसार के व्यक्ति से क्या कोई चाहे, वे भगवान् से ही कुछ नहीं चाहते गुरु। वे तो भगवान् को देते हैं बताओ। सेवा तो भगवान् भी उनकी करना चाहते हैं। वे भी नहीं... तभी तो चरणधूलि की प्राप्ति की आशा में पीछे दौड़ते रहते हैं हर समय। भगवान् अपने परम शुद्ध भक्त के चरणों की धूली की आशा में बस पीछे खड़े रहते हैं, "काश मुझे मिल जाए।" तो सेवा तो भगवान् कर रहें हैं उनकी। वे लेना सेवा भगवान् से भी नहीं चाहते। तो हमारा कार्य कैसे सिद्ध होगा? हमें तो आनंद चाहिए। गुरु की कृपा से और गुरु की सेवा करें तो कृपा मिल जाएगी। अगर गुरु की सेवा करेंगे तो गुरु की कृपा निश्चित मिलेगी। पर गुरु की सेवा करें कैसे?

गुरु को चाहिए कुछ नहीं तो वह सेवा करे कैसे? हमारी गाड़ी तो जहाँ से शुरु हुई थी, वहीं पर अटकी हुई है।

देखो वास्तव में गुरु को, भगवान् को किसी से कुछ नहीं चाहिए। जब गुरु वास्तव में देखते हैं कि हम भजन में, भक्ति में अग्रसर होते हैं, तो वे खुश होते हैं। इसी में उनकी कृपा निहित होती है। गुरु की कृपा से सब कुछ होगा, गुरु की कृपा कैसे मिलेगी? जब गुरु प्रसन्न होंगे। गुरु प्रसन्न कैसे होंगे? जब वे वास्तव में देखेंगे, वास्तव में उन्हें हृदय..., आपकी की हुई भक्ति जो है उनके हृदय को छुएगी तो गुरु प्रसन्न होंगे, उससे हमें कृपा मिलेगी। मिलेगी नहीं, कृपा के झरने फूट उठेंगे ! उसमें हम निष्णात हो जाएँगे, नहा लेंगे पूरी तरह से। कृपा नहीं..., लंगड़ा व्यक्ति पहाड़ पार पा सकता है, गूंगा व्यक्ति गाने गाना शुरु कर सकता है यदि गुरु की कृपा हो। तो जब वास्तव में गुरु प्रसन्न हो जाएँ हमारी भक्ति से तो कृपा के झरने फूट जाएँगे, चारों दिशाओं से झरने फूट रहे हों। मान लो समुद्र में आ गए हो..., बताओ गीले नहीं होओगे तो क्या...? मूल है इसमें गुरु प्रसन्न हों, हमारी भक्ति से। उन्हें तो आपसे कुछ चाहिए नहीं। उन्हें भगवान् से ही कुछ नहीं चाहिए। भगवान् से क्या, उनको तो... भगवान् को तो देने के लिए वे बैठे हैं। तो हम ऐसे तरीके से भक्ति करें कि गुरु प्रसन्न हों...

अब गुरु प्रसन्न कैसे होते हैं? कैसी भक्ति होती है जिससे गुरु प्रसन्न होते हैं? गुरु यह चाहते हैं कि आप राधाकृष्ण की निकुंज सेवा में नियुक्त हो जाओ जल्दी से जल्दी..., जल्दी से जल्दी उसमें प्रविष्ट हो जाओ। अब प्रविष्ट कैसे हों? प्रविष्ट होने के लिए कविराज गोस्वामी कहते हैं- *अतएव*, इसलिए, *गोपीभाव करि अंगीकार*

"अतएव गोपीभाव कोरि अंगीकार।
रात्रिदिने चिंति राधाकृष्णेर विहार।।
सिद्ध देहे चिंति करि ताहाई सेवन।
सखी भावे पाय राधा कृष्णेर चरण।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.२२८-२२९)

गोपीभाव को अंगीकार करो। यह नहीं बोला जा रहा- *गोपी आकार करि अंगीकार।* जैसे सिद्ध प्रणाली मिल गई है अगर किसी को, तो क्या मिला...? एक कुछ..., एक आकृति स्वरुप कुछ पता चला- यह नाम, यह सब कुछ पता चला। वे कह रहे हैं -- *गोपीभाव करि अंगीकार।* और यह गोपीभाव क्या होता है? यह वह... **मंजरी भाव, गोपीभाव का चरम, यह वो भाव है जिसमें प्रतिक्षण, प्रतिक्षण मंजरी अति स्नेहपूर्वक प्रिया-प्रियतम की**

सेवा करती रहती हैं। अति स्नेहपूर्वक, अति स्नेह...! स्नेह से लबालब, स्नेह में डूबे हुए, झरने से नहाई हुई, इस प्रकार से समझें। हर समय स्नेहपूर्वक। स्नेहपूर्वक पालन को ही लालन कहते हैं। स्नेह, अति स्नेहपूर्वक। तो गुरु क्या चाहते हैं? कि हम मंजरी भाव, गोपीभाव में डूब जाएँ।

Destination क्या है? अति स्नेहपूर्वक सेवा। तो Journey क्या होगी? Journey क्या होगी? अगर Journey अति स्नेहपूर्वक सेवा नहीं होगी तो destination कभी प्राप्त ही नहीं होगी। आपके गंतव्य की प्राप्ति कैसे होगी? जब... अगर हम पढ़ाई कर रहे हैं Biology की, तो Maths के professor नहीं बनेंगे। है न? Maths का professor गंतव्य है तो हमारे को Maths की पढ़ाई करनी होगी। तो जब हम अति स्नेहपूर्वक जीवन यापन करते हैं, गुरु देख रहे हैं, उन्हें मालूम है हम किस प्रकार से जीवन यापन कर रहे हैं। अति स्नेहपूर्वक। जैसे सूर्य है, सूर्य कभी यह नहीं सोचता इस पर बरसूँ, इस पर नहीं बरसूँ। सूर्य अकारण करुण, सब पर बरसता है। सब पर! सबको अपनी रोशनी दे रहा है। भेद भाव नहीं कर रहे कि, "हाँ यह मुझे पसंद है, यह मुझे पसंद नहीं है। यह मेरी liking है यह मेरी liking नहीं है।" वह सबके ऊपर बरस रहा है। उसी प्रकार से जो भक्त है, भक्त को अपने सारे क्रिया-कलाप, सारा दिनभर... सारे क्रिया-कलाप अति स्नेहपूर्वक करने चाहिए। जप कर रहे हैं तो अति स्नेहपूर्वक जप। प्रिया-प्रियतम को स्नेहपूर्वक बुलाना, जैसे अपनी बेटी को बुलाते हैं- "गुड़िया" या "मम्मी", तो अति स्नेहपूर्वक जैसे बुलाते हैं। कम से कम उस स्तर पर से तो उतना स्नेहपूर्वक से तो कम से कम। अति नहीं, थोड़ा स्नेह ही सही। पर करना स्नेहपूर्वक है। नाम लें तो स्नेहपूर्वक। ठाकुर की सेवा है, अब ठाकुर की सेवा कोई मज़ाक है क्या? स्नेहपूर्वक सेवा। अब जैसे पाँच (५) मिनट हो गए, तो यह थोड़ा ही न - *'आचमनीय जलं कृष्णाय नमः, आचमनीय जलं आदि गौरांगाय नमः, अद्वैताय नमः'*, ऐसे नहीं। "हे मेरी स्वामिनी, आपका भोजन हो गया, आचमन करें- *एतत आचमनीय जलं राधिकाय नमः। एतत आचमनीय जलं* ठाकुर, मेरे ठाकुर आपका हो गया।" यह नहीं कि पाँच मिनट हुए और उठाया आचमन pot और डाला..., हो गए चारों, next...। न। स्नेहपूर्वक! तो स्नेहपूर्वक नाम, स्नेहपूर्वक ठाकुर की सेवा, और स्नेहपूर्वक सारा... सेवा करते हुए एक-एक व्यक्ति से स्नेहपूर्वक व्यवहार।

हमारा अधिकांश समय जप में और Deity Worship में नहीं जाता। हमारा अधिकांश समय किसमें जाता है? भक्तों के साथ में। तो इस प्रकार का व्यवहार हो, केवल प्रेम ही प्रेम, प्रेम ही प्रेम हमारे से निकले, reflect हो हमारे से। हमने अगर उस प्रेममय

जगत में जाना है, जो destination है, तो हमारे को इस जीवन में प्रतिक्षण प्रेममय व्यवहार करना होगा। ध्यान दें एक-एक शब्द पर। प्रेममय जगत् में जाने के लिए, हमें प्रेममय व्यवहार प्रति... प्रत्येक व्यक्ति से करना होगा। अब अगर कोई मंजरी भाव, मंजरी भाव में सिद्ध है, गोलोक में हैं, तो ऐसा नहीं वह कभी मंजरी भाव है तो कभी कोई और भाव है, एक ही भाव रहेगा हमेशा न। उसी प्रकार से हमारा एक ही भाव से हमें जीवन यापन करना है। क्या है वह भाव? अति स्नेहपूर्वक सबसे व्यवहार। यदि यह नहीं होगा तो कोई scope नहीं है कि हमारी सिद्धि हो कभी भी। एक-एक व्यक्ति से अति स्नेहपूर्वक व्यवहार। कैसे होता है? जैसे phone पर हरे कृष्ण भी बोला, वह भी स्नेहपूर्वक, कोई हमने किसी को sms भेजा, एकदम स्नेहपूर्वक। प्रेम ही प्रेम, positive vibrations. किसी को मिले, किसी को छुआ, किसी को देखा, एकदम स्नेहपूर्वक ! क्यों? क्योंकि सब चीज़े या तो हमें और स्नेह की ओर लेकर जाएँगी, हमारे destination की ओर, या हमें और कठोर बनाएँगी...। यह कोई भी क्षण ऐसा नहीं है कि या आप कोमल न हो रहे हो या आप कठोर न हो। क्षण नहीं बीत सकता ऐसे, बिना कोमल हुए या बिना कठोर हुए। गुरु अपने आचरण के द्वारा सिखाते हैं कि प्रेममय व्यवहार होता कैसे है? कोइ भी बात हो जाए, कोई भी समस्या हो जाए, वह जो destination-journey में कोई भेद कभी नज़र नहीं आता।

जैसे गुरु को क्या बोला जाता है? *प्रेम रुपाय धीमहि।* और दीक्षा का मतलब ही होता है कि हम अपने गुरु की सन्तान हैं। हमारे पिता कोई और हो चुके हैं। यह शरीर के पिता हैं, मेरे पिता कोई और हैं। मेरे पिता मेरे गुरु हैं। यह मेरे पिता जो हैं *प्रेम रुपाय* हैं तो मैं अपनी liking रुपाय कैसे हो सकता हूँ? शेर का बच्चा शेर, गधे का बच्चा गधा। अब शेर का बच्चा गधा तो नहीं होना चाहिए, है न? गाय का बच्चा, गाय का बच्चा- बछ़डा। गाय का बच्चा बिल्ली तो नहीं होना चाहिए, है न? जब गुरु वास्तव में हमारा भक्तों के साथ, हमारा... सब वरिष्ठ हैं यहाँ पर भक्त। जब गुरु देखते हैं हमारा भक्तों के साथ आचरण जो है वह अति स्नेहपूर्वक है तो गुरु वास्तव में हृदय से बहुत प्रसन्न होते हैं। आपकी कभी गुरु से बात हो, न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह जो heart to heart communication है न, यह बिना बात किए आपके हृदय में आपको मंजरी स्वरुप reveal कर देगा, अगर वास्तव में गुरु प्रसन्न होंगे। बात करने की कोई ज़रुरत हो न, इससे कुछ नहीं होता। यह सब *"दिव्य ज्ञान हृदय प्रकाशित"* है। कृपा कहाँ से निकलती है? हृदय से। मिलती कहाँ पर है? हृदय में...।

कभी भी किसी से बात कर रहे हैं, phone पर बात हो, message हो, मिलना हो, आँखों से देखना हो, कभी उसमें negative vibration न हो, कभी उसमें taunt न हो। क्योंकि destination... गुरु को तो क्या चाहिए? गुरु चाहते हैं बच्चे खुश रहें। बाप क्या चाहेगा? बाप यही चाहेगा न मेरे बच्चे खुश रहें। वो पता है कि बच्चे खुश रहेंगे तो स्वरुप में होंगे, और स्वरुप में होंगे जब journey सही चलेंगे। जाना स्कूल में है journey गलत चल रहे हो तुम। तो प्रेममय आचरण ही रखना है हमेशा।

हमारे मन में प्रश्न उठेगा- "हाँ मेरा प्रेममय आचरण तो है, इनसे है, इनसे है, इनसे है और इनसे और इनसे नहीं है।" तो, असलीयत पता है क्या है? यह प्रेममय या स्नेहपूर्वक, अति स्नेहपूर्वक आचरण नहीं है। यह है अपने, जो मेरे concepts के अनुसार जो ठीक, जो मेरी concepts के अनुसार चलते हैं उनके प्रति मेरा राग है और जो मेरे concepts के अनुसार नहीं चलते उनके प्रति मेरा द्वेष है। यह अति स्नेहपूर्वक नहीं है। अति स्नेहपूर्वक आचरण का मतलब है या तो सबके साथ होगा या तो होगा ही नहीं। अगर सबके साथ नहीं है अति स्नेहपूर्वक हमारा व्यवहार, तो इसका मतलब है कि वह राग व द्वेष से, मेरे निजी राग से और मेरे निजी द्वेष से प्रेरित है। जिनसे मेरा स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं है, स्पष्ट है उनसे मेरा द्वेष है। और जिनसे मेरा स्नेहपूर्वक व्यवहार है उनसे मेरा राग है। इसमें बहुत ज़्यादा deep भक्ति की बात नहीं है। अगर आप संसार में भी जाएँगे तो देखेंगे, जैसे मान लो, आप कहोगे, मेरे पिता से नहीं बनती हमारी, example दे रहे हैं। तो आपके पिता से किसी की तो बनती होगी? इसका मतलब उनका किसी से राग है और किसी से उनकी नहीं बनती, उनका किसी से द्वेष है। उसी प्रकार, यह केले वाला है, चप्पल वाला है, कोई भी वाला है, उसकी भी किसी से बनती है और किसी से... 'बनती' का मतलब है कि उसको कोई अच्छे लगते हैं और कोई अच्छे नहीं लगते। किसी से स्नेहपूर्वक व्यवहार है, किसी से नहीं है। तो यह स्नेहपूर्वक नहीं है। यह अपने निजी राग है और अपने निजी द्वेष हैं। स्नेहपूर्वक, अतिस्नेहपूर्वक व्यवहार या तो सबके साथ है या किसी के... गुरु को इसलिए *प्रेम स्पाय,* किसलिए कहा जाता है, सबके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार है। कोई difference नहीं है। इसी को गीता में कहा जा रहा है-

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैन श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।"

(गीता-५.१८)

ब्राह्मणे... ब्राह्मणे गवि हस्तिनी, क्या है वह श्लोक? हाथी, ब्राह्मण, गाय, कुत्ता सबको एक प्रकार से देखना। सूर्य है सबके साथ एक व्यवहार है। अलग व्यवहार है किसी के साथ? गुरु हैं, सबके साथ प्रेममय व्यवहार। और हम सन्तान हैं तो हमारा भी सबके साथ प्रेममय व्यवहार होना चाहिए। यदि सबके साथ प्रेममय व्यवहार नहीं है तो यह हमारे राग-द्वेष से उत्पन्न अहंकार है जो हमारे से यह करवा रहा है। "मुझे यह चीज़ पसंद..."- अहम् का मतलब 'मैं'। 'मैं' का मतलब मेरी liking और मेरी disliking. इसमें स्नेह कहीं नहीं है। इसमें मैं ही मैं हूँ। जब मैं ही मैं हूँ तो वे तो है ही नहीं। जब मैं हूँ, तो वो नहीं। जब वो हैं, तो मैं नहीं। S U N -- sun मतबल 'U', You are there - सूर्यसम। S I N- 'I', 'i' आया तो sun की जगह... becomes sin, वो पाप हो जाता है 'i' आते ही। 'i' आते ही पाप कार्य शुरु। यह 'i' क्षण-भर के लिए आया तो उस समय... पाप क्या होता है? 'i' आने का मतलब पाप।

तो निजी द्वेष व राग से उत्पन्न अहंकार के कारण ही हम अति स्नेहपूर्वक व्यवहार सबसे नहीं करते। मेरी liking, मेरी disliking, यही बात संसारिक कार्य में हम करते थे और यही कार्य, चीज़ हम भक्तों के समाज में भी अभी हम कर रहे हैं। यदि हम स्नेहपूर्वक व्यवहार सबसे नहीं कर रहे तो इसका क्या मतलब है? कि हम अहम् में हैं। अहम् मतलब विन्रमता नहीं है। अब जो गुरु हैं, गुरु का एक बड़ा complex role है। गुरु तो एक शास्त्र को reveal करते हैं हमारे को, कि शास्त्र क्या होते वे बताएँ। शास्त्र कह रहे हैं कि *अतएव मंजरी भाव करि अंगीकार, गोपी भाव करि अंगीकार।* अब कैसे अंगीकार करना है वो बताना। अगर हम सही रुप से नाम लेंगे तो ही भगवान् की प्राप्ति करेंगे कि कैसे भी नाम ले लेंगे? क्या बोल रहे हैं कविराज गोस्वामी...? यही,

एइ रुपे नाम लइले पाए प्रेमधन।

यह नहीं बोला जा रहा किसी भी रुप में नाम ले लो। आप नाम लो तो आपको प्रेमधन मिलेगा। नहीं। *एइ रुपे नाम लइले।* किस रुप में नाम लेने से प्रेम धन मिलेगा? बोलो। वे अगला उपाय अगले श्लोक में बता रहे हैं। कि इस रुप से नाम लोगे न, तो प्रेम धन मिलेगा। कौन सा रुप है वो? हाँ वो रुप है-

"तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत अंत्य लीला २०.२१)

तिनके से भी अधिक अपने आपको पतित मानना। पेड़ से भी अधिक सहनशील। हमारे को कुछ एक word होता नहीं, हम एकदम से flare up हो जाते हैं। पेड़ से भी अधिक सहनशील। आपको किसी ने थप्पड़ मारा आजतक किसी भक्त ने? नहीं... बताओ, सहनशीलता अभी तो छुई नहीं है, अभी तो पता ही नहीं चला सहनशीलता होती क्या है। वह कोई बात करे तो पता नहीं हमारे को क्या-क्या हो जाता है, हमें। हमारा internal digestive system खराब, और पता नहीं external face खराब, पता नहीं क्या-क्या हो जाता है। यह *तरोरपि सहिष्णुना* के आस-पास भी नहीं है। हाँ तो कोई कैसा भी आचरण कर दे, आपका मुख क्या होना चाहिए? वह उसकी तरह... वह plane में कौन होती है वह? Plastic smile? Air hostess. बताओ, और कुछ भी कर लो आप। कम से कम इतना तो *तरोरपि सहिष्णुना* होना चाहिए। Air...air hostess अपि सहिष्णुना। ऐसा..., इतना तो हम कम से कम अंगीकार करें। अति स्नेहपूर्वक नहीं तो... नाम लेने से मैं बार-बार आपको यह कहना चाह रहा हूँ, न तो नाम लेने से सिद्धि होगी, न सेवा करने से सिद्धि होगी। सही रूप से नाम लोगे और सही रूप से सेवा करोगे तो सिद्धि होगी। सही रूप से कैसे नाम लेना है? *तृणादपि सुनिचेन तरोरपि सहिष्णुना।* सही रूप से कैसे सेवा करनी है? अति स्नेहपूर्वक।

हम सब सेवा में सब जुड़ते हैं, पर अति-स्नेह-पूर्वक नहीं जुड़ते। नाम सब लेते हैं, पर अति-स्नेह-पूर्वक तृणादपि भाव से नहीं लेते। तो गुरु भी क्या कर रहे हैं? कि पहले तो बताएँ शास्त्र- उनमें क्या बताया? *गोपीभाव करि अंगीकार।* कैसे अंगीकार करो, journey भी बताएँ कि ऐसे नाम लो...ऐसे। अब हमारे को अपने आपको सबसे पतित जीव कौन मानता है और नाम लेता है? "उन्होंने मेरे को यह नहीं कहा... उन्होंने..." हर दो मिनट बाद हमारे को यह हो गया, वो हो गया। तो यह सबसे पतित व्यक्ति सोच सकता है अपने बारे में ऐसे? कई बार हम सोचते हैं, "मैंने इतनी सेवा करी और मेरे को कुछ नहीं होता।" सेवा अगर हमने कभी करी है सही रूप से, और अगर हम उसका, अगर हमें सेवा का स्मरण हो गया कभी, तो हमने सेवा ही नहीं करी कभी। आपने...अगर आपको अपनी की हुई सेवा का एक क्षण के लिए भी कभी स्मरण हो जाता है कि- "मैंने इतना कुछ कर दिया। मैंने सब छोड़-छाड़ के मैंने इतनी सेवा कर दी। मैंने यह किया, मैंने इसकी सेवा की वो भक्त..." अगर आपको एक क्षण के लिए यह स्मरण हो गया, आपने सेवा भगवान् और गुरु की नहीं की, आपने अपने अहम् की सेवा की। और आपके अहम् को ठेस पहुँची, आपको याद आ गया, "मैंने तो यह किया था, मैंने तो वो किया था।"

एक बात बताओ, आपको याद है आपने २७ जुलाई को tooth brush किया था? पिछले साल, याद है? अच्छा आपको याद है, १४ अप्रैल को आप साबुन से नहाए थे। याद है? आपको याद है कि आपने ४ फरवरी को पानी पिया था, याद है किसी को...? जो रोज़ कार्य करते हैं यह भी कोई याद रखने की बाते हैं? तो सेवा तो हमारा nature है। गुरु-गौरांग की प्रेममयी सेवा करना और सेवा करते ही भूल जाना। तो याद कैसे रह गया हमारे को यह? जो आप रोज़ कार्य करते हो routine कार्य, कभी कोई याद रखने की बात है उसमें कोई? आपको याद है आपने कपड़े पहने थे पाँच साल पहले? आपने खाना, रोटी खाई थी चार साल पहले, याद है अभी? क्यों? nature है। सेवा, गुरु गौरांग की प्रेममयी सेवा, निष्काम सेवा, यह तो मेरा nature है, इसमें याद रखने की क्या बात है? याद तो तब रखना है न जो, जिस समय हमने यह न किया हो। वो मेरा nature नहीं है। यह याद रखना चाहिए कि, "मैंने अपनी पत्नी को डांटा था तीन साल पहले, वो बात याद आ गई"- बिल्कुल, कभी नहीं भूलना चाहिए। यह तुम्हारा nature नहीं है। "मैंने इससे अति स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं किया था।" यह बात याद रखो। यह तुम्हें याद कैसे रह जाता है कि मैंने सेवा कर दी थी। इसका मतलब सेवा नहीं की है। अहम् की सेवा की है। ज़मीन पर आओ...। गुरु का कार्य यह है, पहले तो बताओ- 'नाम लेना है।' फिर उसके बाद 'ज़मीन पर लेकर आना', ताकि आप सही रूप से नाम ले सको। पहले तो यह समझाएँगे-

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ७.७६)

ठीक है, हरे नाम करो, ठीक है..., पर ज़मीन पर आकर करो। पहाड़ को- "cloud nine पर खड़े होकर हरिनाम मत करो...। चलो ज़मीन पर आओ।" क्योंकि, महाप्रभु क्या कह रहे हैं?- *"सेई रूपे नाम लइले पाय प्रेम धन"।* कौन से रूप में? *"तृणादपि सुनिचेन तरोरपि सहिष्णुना"* -- ज़मीन पर लेकर आना गुरु का कार्य है और ज़मीन पर वे न लाएँ तो हम आसामान पर ही रहेंगे। आसमान पर रहकर हरिनाम या सेवा नहीं होती है।

अब, अति स्नेहपूर्वक सेवा, यह मेरा nature है, मंजरी का। यह नहीं कर रहे, तो मेरी... कैसे मेरे को सिद्धि मिलेगी मंजरी भाव में? मेरा स्नेह... मैं किसी से स्नेहपूर्वक, किसी से non स्नेहपूर्वक बात कर रही हूँ, प्रेम पूर्वक...।

गुरु वन्दना हम करते थे...

"चक्षुदान दिलो जेइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेई, दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित।
प्रेमभक्ति जाहाँ हैते, अविद्या विनाश जाते, वेदे गाय जाँहार चरित।।"

(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ५ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

प्रेम भक्ति होगी तो अविद्या का विनाश होगा। अब वही तो प्रेमाभक्ति क्या होती है? अति स्नेहपूर्वक व्यवहार। यह है प्रेम भक्ति का लक्षण। हमारा अविद्या नहीं जाएगा तो हम सुखी नहीं हो सकते? अविद्या कैसे जाती है? प्रेममयी भक्ति से। प्रेममयी भक्ति, वही कह रहे हैं-'अति स्नेहपूर्वक व्यवहार'। भक्ति क्या होती है? माला करने को भक्ति कहते हैं क्या? या वो एक करोड़ रुपए दे देना, उसको भक्ति कहते हैं? या सेवा करने को भक्ति? न। अति स्नेहपूर्वक नाम लेना, अति स्नेहपूर्वक माला करना, अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करना, इसको भक्ति कहते हैं। प्रेमभक्ति...

प्रेमभक्ति जाहाँ हैते, अविद्या विनाश जाते... हम इतनी किताबें पढ़ते हैं- सुधानिधि..., यह निधि, वो कुसुम... कुसुमांजलि, प्रेम-भक्ति-चन्द्रिका, वो सब तो ठीक है। एक छोटी सी बात में सारा सार है,

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोए।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होए।।"

(कबीरदास)

हमने इतना कर लिया, प्रेम का पाठ नहीं पढ़ा अति स्नेहपूर्वक व्यवहार का। और पण्डित की क्या definition है? *पण्डिताः समदर्शिनः* - गीता। *ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होए, पण्डिताः समदर्शिनः*। पण्डित... सबसे, पण्डित का मतलब वो नहीं होता, head shave और बड़ी सी शिखा। जो सबसे अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करे, महापण्डित। जो बड़े से बड़ा महात्मा नहीं हो सकता, हिमालय पर रहने वाला, आप हो सकते हो, अगर स्नेहपूर्वक व्यवहार करो। *समदर्शिनः*...

देखो, जो भगवान् की सेवा है वही गुरु की सेवा है। और जो गुरु की सेवा है वही भगवान् की सेवा है। और जो भक्तों की सेवा है, वही गुरु की सेवा है, और जो गुरु की सेवा है, वही भक्तों की सेवा है। गुरु को आपसे कुछ नहीं चाहिए, भगवान् को आपसे कुछ नहीं। अगर आप अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करो तो यह भगवान् की सेवा कैसे है? तभी तो सिद्धि लाभ करोगे, तो भगवान् की सेवा है। ठीक है। अगर आप अति स्नेहपूर्वक भक्तों से व्यवहार करते हो तो यह भक्तों की सेवा है, भगवान् की भी सेवा

है और गुरु तो देख ही रहे हैं साक्षात्। गुरु प्रसन्न हो रहे हैं तो गुरु की भी सेवा है। अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करना, भगवान् की भी सेवा, गुरु की भी सेवा और भक्तों की भी सेवा। और अपना निजी कल्याण... और इस... और जब तक अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करेंगे, हो ही नहीं सकता कि हम दुःखी हों। हम अति स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं करते इसलिए हम दुःखी हैं। अरे ! यह क्या है? अरे यह क्या स्नेहपूर्वक व्यवहार होता है? गुप्पा बनाकर बैठ गए। गुप्पा बोलते हैं न पंजाबी में? न न। और, "मेरे को कोई प्रेम नहीं करता।" तुम्हारे दिमाग में भूसा भरा हुआ है। तुम... यह तो वही बात है कि law of karma में हमें विश्वास नहीं है कि जो as you sow, so shall you reap. If you giving अति स्नेहपूर्वक, doing अति स्नेहपूर्वक, what are you going to get in return? डँडे...? आम का बीज बोओगे, what are you going to get? नींबू? आम। If you are giving अति स्नेहपूर्वक आचरण with everyone, what are you going to get in return from everyone? What I am getting return from all of you? Love, Love and Love ! Why? Because I am giving Love, Love and Love ! Why not follow the same regime? Why not follow the same regime? Give Love, you get Love. Want Happiness? Give Happiness. Don't force... don't extract happiness from your wife, don't extract happiness from Devotees, don't extract Happiness from kids. Give... You get what you give.

"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।"

(गीता-१८.६२)

गुरु की कृपा से, भगवान् की कृपा से प्राप्त होगी शान्ति, आनंद। तुम दोगे तो मिलेगा। अति स्नेहपूर्वक व्यवहार, इसका... यह नहीं करेंगे तो न गुरु की सेवा है, न भगवान् की सेवा है, न भक्तों की सेवा है, किसी की सेवा नहीं, अहम् की सेवा है। सीधी-सीधी सी बात है।

और हमें इतने साल बीत जाते हैं। होता क्या है वही material life की चीज़ें यहाँ पर run करनी शुरु हो जाती हैं। क्या होता है material life की चीज़ें? Material life में क्या होता है? अपनी liking और disliking के अनुसार हमारा जीवन चलता है। अपने... "What I like and what I don't like. I don't like this and I like this." ..., its as simple as that ! Its as simple is that. I like it, I don't like it ! हाँ, तो यही चीज़ें यहाँ पर नहीं करें। ऐसे जीवन यापन को क्या बोला जाता है? Mechinal life. Mechanical

मतलब क्या है? मशीन ने यूँ कर दिया, ओ यह चल गया, यूँ कर दिया, इसका कोई..., मशीन यूँ-यूँ करती रहती है। Mechanical life. एक होती है Magnetic life. आप अति स्नेहपूर्वक सबसे व्यवहार कर रहे हैं, न अपनी liking है इसमें, न disliking है। तो वो है, जब भक्त ऐसा आचरण करता है वो Magnetic centre बन जाता है। सारी दुनिया उसकी ओर आकर्षित..., भगवान् जब हो जाते हैं तो छोटे भक्त और मनुष्यों..., बाकि सामान्य मनुष्यों की बात क्या है? अरे ! मनुष्य तो छोड़ो, पशु भी आकर्षित हो जाते हैं। अति स्नेहपूर्वक अगर हम व्यवहार करेंगे, पशु के मन में कोमलता आ जाएगी। Problem सारी यह है कि हमारे अन्दर खोट है सारे के सारे। सारी problem... जड़ क्या है? मैं अति स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं करती, बस यह सारी चिन्ता है, crux. अगर हम अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करें तो क्या होगा? We will become Magnetic center. चुम्बक समझते हो? चुम्बकीय आकर्षण, इसे Magnetic center कहते हैं। चुम्बकीय आकर्षण हो जाता है। चुम्बक attracts everything you know, 360 degrees. If you become some चुम्बक, 360 degree it will attract everything. Otherwise you become mechanical centres. "हाँ, हम ऐसे कर रहें हैं, भक्ति में भी आ गए पर... हाँ यह मेरी liking... मैंने कह दिया न।" अरे ! बताओ भगवान् ने कभी बोला? "मैंने कह दिया।" भगवान् क्या बोलते हैं?

"इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।।"

(गीता-१८.६२)

और हम क्या बोलते हैं? "मैंने कह दिया न, अब ऐसे ही होगा।" यह कोई बात है?

इतने साल बीत जाते हैं but the main thing is कि यह जो अति स्नेहपूर्वक व्यवहार है, इस पर हम ज़्यादा तवज्जु नहीं देते। यह बहुत शोक की बात है। We forget to learn... छोटी सी बात है, we forget to learn. अरे ! किसी को कुछ नहीं... यही गुरु पूर्णिमा है, यही जन्माष्टमी है, यही है। इस बात को समझ जाएँ कि मेरा व्यवहार, जो सिद्धि है वही साधना काल में होना चाहिए। यही हर क्षण होना चाहिए। We forget to learn..., rather we should learn to forget. किसी ने हमें कुछ बोल दिया, वो भूल के राज़ी नहीं है, "उस समय उन्होंने मुझे ऐसे बोला था, उस समय उन्होंने मुझे ऐसे देखा था।" यह कोई याद रखने की बातें हैं? We should learn to forget, भूल जाओ। याद ही नहीं है। मुझे तो कुछ याद नहीं रहता। मेरे को कोई बोलता है राधाकुण्ड में कोई,

"आपने गुरुजी की सेवा करी।" मैं surprise हो जाता हूँ- "अच्छा मैंने क्या किया था, पता ही नहीं चला।" मुझे याद..., आखिरी वह जो store होता है न दिमाग का, वहाँ पर भी नहीं पड़ी होती यह। तो we should learn to forget. सेवा तो कोई... सेवा की चेष्टा कर रहे हैं, सेवा तो क्या होता है? सेवा याद नहीं रहनी चाहिए करके, वह तो सेवा ही नहीं होती कभी भी।

भक्ति जो है क्रियाजन्य नहीं है, "हाँ जी मेरी सोलह (१६) माला सुबह हो गई, मैंने तो दो (२) घंटा reading भी कर ली।" उसके बाद दिनभर व्यवहार कैसा किया? अति स्नेहपूर्वक नहीं किया तो यह भक्ति है? भक्ति life style है। Life style क्या होता है? जीवन यापन करने का तरीका। वो अति स्नेहपूर्वक होना चाहिए। कुत्ते को भी अति स्नेहपूर्वक देखें, रिक्शे वाले को..., किसी से भी बात करें। भक्ति में बढ़ना है? जो आपके घर में साफ़ करने आते हैं न, maid-vaid, उनसे भी अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करें। अब आप सोचेंगे, "वो सिर पर चढ़ेंगी।" ऐसा कभी नहीं होगा। मैंने material, मैं भी रहा हूँ लोगों के साथ में, business circle में भी, सब जगह में भी। जैसे आप लोग से बात करता हूँ न, वैसे ही सब लोगों से करता हूँ। Ten on ten control over tongue, ten on ten. जो बोलना है... ज़रुरी है तो बोलना है नहीं तो मौन। और जैसे आपके साथ व्यवहार है वैसे ही सबके साथ... कोई, कोई भेद नहीं है। आप कहोगे सिर... कोई सिर पर नहीं चढ़ता। बल्कि कांपते हैं... "इनसे...इनसे नहीं। इनसे गलत व्यवहार नहीं।" तो अगर आप अति स्नेहपूर्वक करेंगे, तो जो आपके भी लोग... खुश रहोगे सबसे main बात है। नहीं तो घर पर भी प्रभुत्व जमाने की चेष्टा करते रहोगे। "मैंने तो सुना दिया उसको, मैं नहीं डरती किसी से।" यह कौन सी भक्त की language है? ऐसा नहीं होता भक्त।

भक्ति ऐसी होनी चाहिए कि हमारे को देखते ही लोग भक्त बनना चाहें। आप प्रचार करना चाहते हो, प्रचार कैसे करोगे? मुँह पर बारह (१२) बजे हुए हैं, बताओ प्रचार कैसे करोगे? और मुँह ऐसा है कि पता नहीं क्या हो गया हो, क्या ज़ायदाद कोई चला गया हो। What is a Devotee? Devotee means, one who personifies Vaiṣṇava philosophy. उसका विग्रह... उसका रूप, उसका विग्रह मूर्तिमान स्वरूप है आनंद का, वैष्णव philosophy का। बोलता है उसका... उसका aura बोलेगा, उसका मुख बोलेगा। Personifies Vaiṣṇavism. What is a Devotee? Personified form of Vaiṣṇavism.

तो हमारे को अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करना ही है। The qualities..., Devotee means कि वो देख के पता चलता है कि, what is this person is made up of? अतिस्नेह-

personifies वैष्णव qualities. Personifies, personification of Vaiṣṇava qualities. That is Vaiṣṇava ! What is a dog? Personification of dogly... dogly things..that is dog. And what is a Devotee? Personification of Godly, dogly-Godly. Personification of Godly qualities is Devotee, वैष्णव। उसी तरह से dogly qualities - dog, कुत्ता। कुत्ता क्या करता है? जो उसको पसंद है, उसे जीभ चाटेगा...राग। और द्वेष है-भौंकेगा। वही हमारा हाल है- dogly या Godly. अति स्नेहपूर्वक व्यवहार कुत्ता करता है? तो अगर किसी के प्रति भी अति स्नेहपूर्वक आचरण नहीं होगा तो अपराध हो जाएगा। अब अपराध करें तो २ रुपए कमाए और ८५० रुपए का कर्ज़ चढ़ गया एक second में, अगले क्षण फिर ८५० का कर्ज़, बिना कमाई। कमाई २ रुपए और २ second में १७०० रुपए का कर्ज़। फिर तीसरा second, फिर non अति स्नेहपूर्वक। फिर ऐसे पूरा एक मिनट बीतता है। कितना कर्ज़ा हो गया? १ लाख। फिर दस मिनट बीते- १० लाख, एक घंटा बीता- ६० लाख। फिर दिन बीता, एक दिन में १.५ करोड़ के कर्ज़े के नीचे आ गए।

और यह अति स्नेहपूर्वक आचरण न करने का ऐसा एक vicious circle है, जितना अति स्नेहपूर्वक आचरण नहीं करेंगे उतना और नहीं करने के लिए प्रेरित होंगे। जितना नहीं... जितने आप कठोर, द्वेष है अगर... द्वेष को कम नहीं करेंगे तो वो बढ़ेगा। अति स्नेहपूर्वक जितने क्षण हम नहीं करेंगे, उतने क्षण हमारा कठोर आचरण बढ़ता रहेगा। कठोर आचरण है जीवों से? तो यह और बढ़ेगा, जिस-जिस क्षण नहीं करेंगे। हम सबको मालूम है कि अति स्नेहपूर्वक आचरण करना चाहिए। मैंने train में भी बताया था दस (१०) मिनट की Talk में, कि हमारी प्रत्येक सेवा से हमारे भक्तों से सम्बन्ध बेहतर होने चाहिए, तो तो सेवा हो रही है। नहीं तो, सेवा नहीं हो रही। क्या हो रहा है? अपने राग-द्वेष की सेवा हो रही है। सेवा तो भगवान् की करनी थी हमने सुना था। यह राग और द्वेष की सेवा हो रही है। अब आपको राग-द्वेष लगेगा पता नहीं क्या होते होंगे? इसका सरल मतलब है। अपनी liking और disliking की सेवा हो रही है। This... अपने concepts जो मुझे अच्छे लगते हैं उनकी सेवा हो रही है। Likes और dislikes की।

तो हमें मालूम है कि स्नेहपूर्वक आचरण करना हमने पहले ही बताया। पर हम इस स्नेहपूर्वक आचरण में हम दृढ़ नहीं होते, हमारा संकल्प यह करने का दृढ़ नहीं होता कि हर समय स्नेहपूर्वक आचरण करना है। तो हमें इस संकल्प को दृढ़ करना है। "हो गया स्नेहपूर्वक तो ठीक है, नहीं हुआ तो ठीक है, मुझसे नहीं होता। मैं... हो गया तो ठीक है।" ऐसे थोड़े ही न होता है। बचपना बंद करें अब। "हो गया तो ठीक, नहीं हुआ तो ठीक।" जैसे भगवान् के बारे में, "इस संसार में भगवान् हैं तो ठीक, नहीं हैं तो

ठीक", यह वही वाली बात है बिल्कुल। उनके... उनके आचरण में कोई फर्क पड़ा? भगवान् हैं या नहीं हैं। हैं तो भी वही आचरण है और नहीं है, ditto same आचरण है। उसी प्रकार से हमारा है- "स्नेहपूर्वक हो गया तो ठीक, नहीं हुआ तो ठीक।" Atheism पर आ जाते हैं। जैसे भगवान् हो ही न। मुझे स्वरूप प्राप्त करना ही नहीं है, मुझे आनंद प्राप्त करना ही नहीं है। मैं अपने ऐसे ही concepts से आनंद प्राप्त कर लूँगा। न रे न।

और जो वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा करना चाहते हैं, गुरुजी की सेवा, उनके लिए तो Organisation में तो और भी एक... वो हो जाता है... आसान होता है, इस बात को हमेशा याद रखना और... जैसे मान लो कोई सेवा में न जुड़े हों, तो आपको बोलें कोई, अति स्नेहपूर्वक आचरण करना है, "हाँ हाँ हम तो सबसे अच्छी तरह बात करते हैं।" पकड़ में ही कुछ नहीं आएगा। यहाँ पर तो जैसे किसी से अति स्नेहपूर्वक नहीं किया, वो सब reports आनी शुरु हो जाएँगी, Organisation के अन्दर। यह Organisation इतनी बढ़िया चीज़ है हमारे को सीधा करने के लिए। सीधा नहीं होंगे तो खड़े हैं लोग- "अरे सीधा खड़ा हो जा।" "मैं ऐसे ही खड़ा हूँ।" Right on the nail, straight... Organisation इतना helpful है।

हम अपने आपसे... *एकाकी आमार नाहि पाए बल। अति स्नेह आचरणे- एकाकी आमार बल होबे न,* तो जब साथ में होंगे तो कोई न तो वो कहेगा- हाँ, फिर गुरुजी कहेंगे- "क्यों भाई? तुमने प्रवचन सुना था वो एक वो grey नाम का प्रवचन हुआ था। सिर्फ़ good qualities देखना। तुम हमेशा राग और द्वेष को ही देखते रहते हो हर समय।" जैसे हमारे को कोइ व्यक्ति पसंद नहीं है, मान लो उसकी खराब चीज़ भी है, अगर तुम उस खराब चीज़ को बार-बार चिन्तन करोगे, तो जिस चीज़... अगर तुम मंजरी स्वरूप का चिन्तन करोगे तो क्या बन जाओगे अन्त में? मंजरी। तो कोई खराब चीज़..., quality मान ली है उस भक्त में और उसका बार-बार चिन्तन करो तो क्या होगा? वो चीज़ तुम्हारे अन्दर प्रतिष्ठित हो जाएगी। उसके बारे में तुम सोच रहे हो, बात कर रहे हो बार-बार, तो वो चीज़ तुम्हारे अन्दर आ रही है। जो सोचोगे वही... वही हो जाएगा। तो grey का मतलब यही है Grey Lecture का कि हम सिर्फ़ अच्छी चीज़ को ही सुने, बात करें, सोचें। खराब है तो भी देखें भी न क्योंकि वो हमारे अन्दर आ जाएगी। देखना... तुम्हारा... यह infectious है। और स्नेहपूर्वक आचरण इसलिए करना है क्योंकि we all are... Devotees are a vehicle of contagious Love. वे भगवान् की मूर्ति हैं। लोगों में, जो प्रचार करते हैं वे भगवान्... जैसे हमारे यहाँ लोग किसलिए आ रहे हैं? वो किसी को तो देखा नहीं है, वे देख रहे हैं यह गुरुजी ऐसे हैं वो आचरण व्यवहार को

देखकर ही आ रहे हैं- प्रेम पूर्वक, स्नेहपूर्वक। तो हमारी कितनी बड़ी duty बन जाती है। लोग किसको देखकर आएँगे? गुरुजी को एक बार देखे, उसके बाद कहेंगे हमें बाकियों में रहना है, बाकियों में भी वो... हर कोई बेटे में बाप की झलक देखना चाहता है। जैसे हमारे यहाँ पर मन्दिर में आएँगे, वो क्या देखेंगे? गुरु जी तो जो हैं सो हैं... और वो बेटा भी, बेटा भी तो...।

यह सारी कथा कहानी सुनाने का मकसद यह है कि हम स्नेहपूर्वक आचरण नहीं करेंगे तो उस स्नेहपूर्वक आचरण में सिद्धि नहीं मिलेगी। मंजरी भाव है स्नेहपूर्वक आचरण में सिद्धि प्राप्त करना। अति स्नेहपूर्वक, सबसे। स्नेहपूर्वक आचरण जो होता है, भगवान् के सखाओं में भी आता है, कि जब वास्तव में कोई गुरु का प्रिय हो रहा है या गुरु की सेवा में अग्रसर हो रहा है तो वो लोग क्या करते हैं भक्त? और आगे लाओ- "तुम आगे चलो, तुम आगे बढ़ो- *अहम् पूर्वम, अहम् पूर्वम,* तुम आगे बढ़ो। मैं, मैं ठीक हूँ। तुम आगे बढ़ो।" खुश होते हैं, और गुरु व गौरांग की सेवा में आगे बढ़ते देखकर खुश होते हैं।

हाँ इसमें सिर्फ़ एक अपवाद है कि किसके साथ अति स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए। अगर हम सोचें हमारे को कोई relief है तो हमारे को relief नहीं है। हमारा तो दिमाग ऐसे ही चलता है। एक relief है शास्त्रों के अनुसार है। वह बताते हैं ठाकुर महाशय-

*"कृष्णसेवा कामार्पणे, **क्रोध भक्तद्वेषी जने,** लोभ साधुसंगे हरिकथा।*
मोह इष्टलाभ बिने, मद कृष्ण-गुण गाने, नियुक्त करिबो यथा तथा।।"
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका २२ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

जो द्वेष करता हो भक्तों से, negative बोलता हो, दोषों का, वो बोले, "मैं तो भक्तों के बारे में सच बोल रहा हूँ इनमें यह दोष है।" तो, विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर कहते हैं- दोष अनुकीर्तनम् भी जो है, दोष का कीर्तन भी है उसको निन्दा कहा जाता है...द्वेष कहा जाता है। तो अगर कोई negative व्यवहार कर रहा है तो उस... उन व्यक्तियों के साथ जो आपके गुरु से... अगर हम किसी को गुरु मानते हैं, अगर उस गुरु से कोई व्यक्ति द्वेष कर रहा है तो उससे कभी भी स्नेहपूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए। गुरुदेव क्या कहते है? उसके प्रति हमें क्रोध व्यक्त करना चाहिए। अगर हम ऐसे व्यक्ति के प्रति जो हमारे गुरु से द्वेष करे, उसके प्रति क्रोध व्यक्त नहीं कर रहे तो इसका मतलब हम गुरु से ही प्रेम नहीं करते। गुरु से प्रेम नहीं करते। जो... अगर हम

वास्तव में गुरु की कृपा प्राप्त करना चाहते, तो हमारी गुरु में ऐसी निष्ठा होनी चाहिए जैसी हमारी भगवान् में निष्ठा है। और हमें गुरु की जो निन्दा करता है हमें यह हृदय से मानना चाहिए कि वो व्यक्ति भगवान् का भी निन्दुक है, पूरे समाज का निन्दक है और ऐसे व्यक्ति का स्वप्न में भी यदि कभी हमें दर्शन हो जाए तो हम उसी समय अपवित्र हो जाएँगे। द्वेषी व्यक्ति का वास्तव में यह अर्थ होता है।

और अगर हम कृपा प्राप्त करें गुरु में, तो किस प्रकार की श्रद्धा होनी चाहिए, कि 'यह मेरे गुरु की चरण धूली जो है इसका एक कण भी मैं, अगर मैं किसी भी दिशा में डाल दूँ, तो उस दिशा के अनन्त लोक जो हैं उसी समय पवित्र हो जाएँगे। इस दिशा में डाला सारे अनन्त लोक पवित्र हो जाएँगे। चौदह (१४) लोक पवित्र हो जाएँगे, गुरु के धूली के एक कण से।' यह निष्ठा गुरु में और यह जो द्वेष करते हैं, उसके प्रति क्रोध-भाव इसी दर्जे का होना चाहिए। इस... ऐसे व्यक्ति के प्रति कभी भी अति स्नेह व्यवहार, आचरण नहीं सोचना चाहिए।

इसके अतिरिक्त जितने भी भक्त हैं उनके साथ अति स्नेहपूर्वक ही व्यवहार होना चाहिए। नाम भी लेना है ऐसे नहीं "भई सौलह माला..." नाम भी लेना है अति स्नेहपूर्वक। लाड लड़ाते हुए नाम लेना है। और ठाकुर जी की सेवा मैंने आपको बताया कैसे करनी है। Four-three-two-one-seven वाली आरती नहीं करनी। "हाय, मेरी किशोरीजी की आरती उतार रहा हूँ, हाय इनको कभी नज़र न लगे। यह चन्द्रावली वगैरह इनको नज़र लगाती हैं। हाँ, यह सास-ससुर, यह सब... यह पति अभिमन्यु, यह जटिला-कुटिला, एक भी नज़र न लगे। सारी लीला... इनकी आरती बलिहारी। इनकी... सारे कष्ट जल जाएँ इनके, सब के सब... यह तो, इनको तो होश ही नहीं रहता, कहीं भी गिर जाती हैं, होश में, इनके सारे कष्ट उतर जाएँ।" इस प्रकार की आरती, यह ऐसे... यह ऐसे आरती की जाती है।

महाप्रभु की आरती कर रहे हैं- "यह प्रेम में विह्वल हो जाते हैं। यह कहीं भी गिर जाते हैं, चोट लगती है, इनके ऐसा कुछ न हो। इनके ऊपर कोई नज़र न लग जाए। मेरे ठाकुर को नज़र न लगे। इनको नज़र न लगे। सारे इनके कष्ट जल जाएँ, मर जाएँ। उसके बाद शँखोदकम्, अमृत वर्षा कर दो। ओ-ओ सब पौंछ भी दूँ। किसी प्रकार का कुछ न रहे।" यह ऐसे आरती, यह स्नेहपूर्वक हो रहा है। स्नेहपूर्वक नाम भी जो होता है, आदर पूर्वक स्नेहपूर्वक नाम लेना, चिन्तन करते वक्त। और आचमन भी कराना है। जब भोग लगा, यह नहीं हो गया, first offering... अरे इसको छोड़ो। ऐसे नहीं। अब जैसे कि आप मानलो आपका घर में बच्चा है, उसने मुँह में निवाला डाला, "अभी तेरा

कुल्ला करवा देती हूँ।" यह कोई बात हुई? पूछ लेते हो, "खा लिया बेटा, खा लिया? ले चल पानी... पानी पी। चल अब आ कुल्ला..." ऐसे करते हो क्या? अब पाँच मिनट हो गए, अब तो कुल्ला करना ही पड़ेगा। यह कोई बात हुई? ऐसे नहीं होता आचमन। आचमन होता है कुल्ला कराना। पहले ठाकुर से पूछो, फिर राधारानी से, फिर गुरुमंजरी। मेरी गुरुमंजरी खा रही हैं, तुम उन्हें कुल्ला कराने के लिए पहुँच गए। आओ खड़े होओ। नौकर क्या करता है? खड़ा होता है, "हाँ, ले आओ, towel ले आओ।" *प्रौछनं वस्त्रं*। तो सारे काम अति स्नेहपूर्वक करने हैं बताओ।

"विग्रह नहि तुमि साक्षात् व्रजेन्द्रनन्दन।
विप्र लागि कर तुमि अकार्य्य-करण।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ५.९६)

"नाम, विग्रह, स्वरुप, तिन एकरुप,
तिने भेद नाहि, तिन चिदानन्दरुप।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला १७.१३१)

नाम-विग्रह-स्वरुप तीनों एक हैं, *कोनो भेद होबे न।*

जैसे ठाकुर की सेवा कैसे करोगे गोलोक में, अति स्नेहपूर्वक।

तो विग्रह की कैसे करनी चाहिए? अति स्नेहपूर्वक।

नाम की कैसे करनी चाहिए? अति स्नेहपूर्वक।

भक्तों की कैसे करनी चाहिए? अति स्नेहपूर्वक।

इसमें तो... मुश्किल है नहीं। और जो हृदय... जो वास्तव में अति स्नेहपूर्वक सेवा करेगा न, वो गुरु के सबसे करीब रहेगा। बजाय... भले ही जीवन में एक बार भी बात न हो। कोई स्त्री हो, पुरुष हो, कोई भी हो, लड़का-लड़की कोई भी हो। वो अति स्नेहपूर्वक व्यवहार करेगा। वो... गुरु उसके हृदय में चलेंगे, वो देख सकेगा साक्षात्। और वो गुरु के हृदय में हमेशा रहेगा। जिस प्रकार भगवान् ललायित रहते हैं नए-नए भक्तों की सेवा स्वीकार करने के लिए, गुरु भी हमेशा ललायित रहते हैं वास्तव में किसी को उन्नत देखते हुए। जब हम गुरु के दर्शन के लिए तरसते हैं, गुरु भी किसी के दर्शन के लिए तरसते हैं। कि हाँ जो वास्तव में भक्ति में उन्नत हो रहा है, उसे देखकर खुशी होती है। गुरु की कृपा मिलेगी जब हम भक्ति में उन्नत होंगे।

और बात, अति स्नेहपूर्वक आचरण करना इस जगत में क्यों ज़रुरी है? प्रश्न उठ सकता है। ज़रुरी इसलिए है कि आपसे कोई बोले कि भाई, आप... चावल बनाना चाहते हो जी, चावल बनाने हैं तो सबसे पहले गर्म किसको होना पड़ेगा? चावल को कि किसको? पतीले को। पहले बाहरी गर्म होगा तो... चावल तो ठोस होता है, तो आग लगेगी तो ही तो वो soft होगा, softness आएगी, नहीं तो hardness है। उसी प्रकार जो स्नेहपूर्वक आचरण है, 'मंजरी स्वरुप' तो वो सबसे internal है। External most हमारा यह... यह human body, human व्यवहार। तो जितना-जितना यह परिपक्वता होगा, उतना आसानी से हमारे हृदय में परिपक्वता आएगी वो आचरण ग्रहण करने में। जो चीज़ बनेगी तो ही तो वो गर्म... पानी गर्म कैसे होगा पतीले में? पहले बर्तन गर्म होगा, फिर पानी गर्म हो जाएगा। उसी प्रकार स्नेहपूर्वक आचरण भीतर कैसे होगा? पहले यह जगत से जो आचरण वो सारा स्नेहपूर्वक होना चाहिए। और सबसे... need of the hour जो है, जब तक यह वाला आचरण नहीं कर रहे तब तक दुःखी ही रहेंगे। अपने वह face में देख लेना, जिस समय अति स्नेहपूर्वक आचरण नहीं करते... देखना। आपको किसी न किसी... villain type की छवि नज़र आएगी। फिर से face में और कोई... दर्पण झूठ नहीं बोलता। और गुरु वे दर्पण हैं जिसमें हम..., सब कुछ नज़र आ जाता है। गुरु दर्पण हैं सारे शिष्यों के, उन्हें सब शिष्यों की कहानी पता होती है। पता है कितना श्रृंगार हो चुका है। दर्पण में जब व्यक्ति देखता है तो पता चलता है कितना श्रृंगार हुआ और कितना रहता है, यह भी पता चल जाता है। वही दर्पण गुरु हैं। कितना यह मेरा बच्चा, श्रृंगार इसका हो चुका है। यह कितना यह अभी कपड़े पहनना, निक्कर पहनना भी नहीं सीखा अभी। वह सब बोलता है... दर्पण में सब नज़र आता है।

ठीक है कोई जिज्ञासा?